F ROS

दर्शनशास्त्र (वैकल्पिक विषय)

(टेस्ट-I) प्रथम प्रश्नपत्र

(चार्वाक, जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन, सांख्य दर्शन, योग दर्शन)

DTVF/17–OPS-**P1**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Mukesh KUMAR LUNAYAT

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 1, 16/07/199,

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	2	5	5	9	0	5

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): HINDI

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Mukesh

नोट: प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश अंतिम पृष्ठ पर संलग्न है।

Evaluation Analysis

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

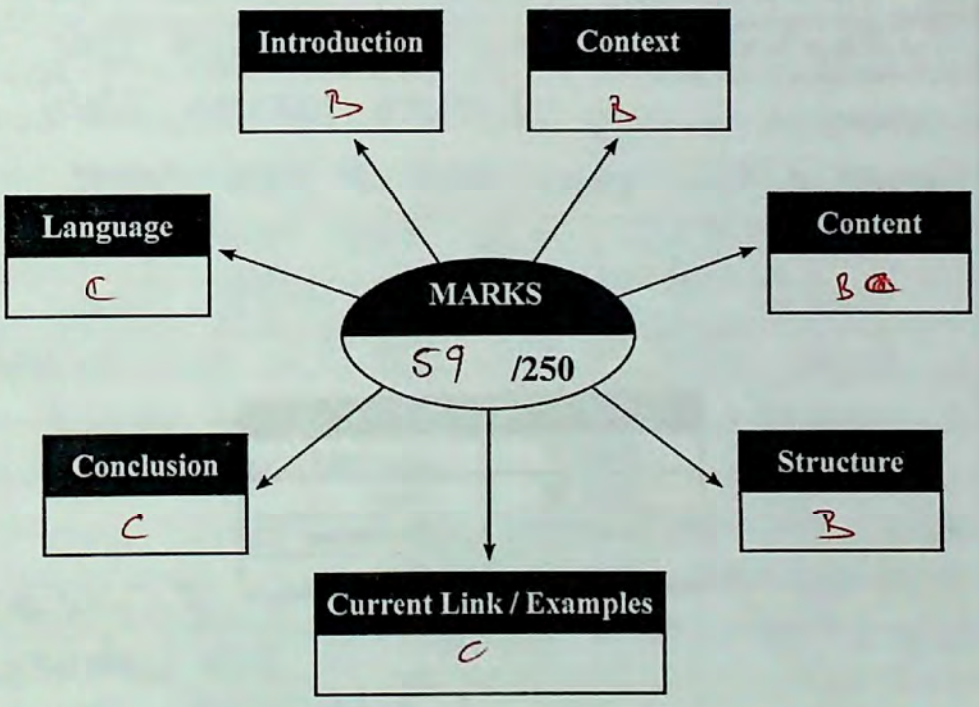

A3

व्यापक विश्लेषण / Macro Analysis

- लेखन में सुधार अपेक्षित है।
- अवधारणात्मक त्रुटियों से बचें।
- उत्तर लेखन में क्रमबद्धता लाने का प्रयास करें।

Grade Card	
Grade 'A'	Very Good
Grade 'B'	Good
Grade 'C'	Satisfactory
Grade 'D'	Poor

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स
संख्या के अ
न लिखें।
(Please do
anything
question
this space)

प्रत्य

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - A / SECTION - A

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दें: 10 × 5 = 50

Answer the following in about 150 words each:

(a) चार्वाक का स्वभाववाद

Naturalism of Charvaka

चार्वाक दर्शन एक नास्तिक, अनीश्वरवादी, जड़वादी एवं प्रत्यक्षवादी दर्शन है। प्रत्यक्ष को ही यथार्थ ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र साधन मानने के कारण चार्वाक उन सभी सत्ताओं विशेषतः अतीन्द्रिय सत्ताओं का खंडन करता है जिनके ज्ञान की प्राप्ति इन्द्रियानुभव द्वारा संभव न हो।

प्रत्यक्ष

चार्वाक मतानुसार जगत सत है क्योंकि यह प्रत्यक्षगम्य है। चार्वाक मतानुसार जगत की उत्पत्ति हेतु ईश्वर को कारण मानने की आवश्यकता नहीं क्योंकि जगत का निर्माण चार भूतों - पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल के आकस्मिक संयोग के कारण हुआ है। इस प्रकार केवल जड़ पदार्थों से ही जगत् एवं चैतन्य की उत्पत्ति मानने के कारण चार्वाक का तत्वमीमांसीय जगत सम्बंधी सिद्धांत स्वभाववाद कहलाता है। प्रत्यक्ष को ही एकमात्र प्रमाण मानने के कारण चार्वाक सभी अप्रत्यक्षगम्य सत्ताओं यथा आकाश, पूर्वजन्म व पुनर्जन्म, ईश्वर, आत्मा, कर्मनियम का खंडन करता है। इस प्रकार केवल जड़ पदार्थों से ही जगत का निर्माण मानने के कारण चार्वाक तत्वमीमांसा के क्षेत्र में भौतिकवाद की स्थापना करता है।

वस्तुतः चार्वाक का स्वभाववाद संगत सिद्धांत नहीं है क्योंकि केवल प्रत्यक्ष के आधार पर इसकी स्थापना के क्रम में चार्वाक प्रत्यक्ष की सीमा का उल्लंघन कर अनुमान का सहारा लेते हैं।

पान, कत्था आदि के संयोग से लाल रंग की उत्पत्ति की उपमा भी है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नीतिशास्त्रीय दृष्टिकोण से भी स्वभाववाद घातक है क्योंकि यह भोगवाद को बढ़ावा देता है।

भटकाव से बचें।

2 1/2

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	0.25	1	1	0.25	–	–	✓
Grade	B	c	c	c	–	–	–

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(c) योग के अन्तरंग और बहिरंग साधनों पर संक्षिप्त लेख लिखिये।

Write a brief note on internal and external organs of Yoga.

योग दर्शन में योग को परिभाषित करते हुए कहा गया है " ~~[illegible]~~ "योगश्चित्तवृत्तिनिरोध:" अर्थात् चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है।
~~[illegible]~~ योग दर्शन में चित्त की वृत्तियों के निरोध एवं क्लेशों के विनाश हेतु "अष्टांग-योग" के पालन को आवश्यक माना गया है।

योग के अंतरंग साधन:-

अष्टांग योग के प्रथम 5 साधनों - यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार को योग के अन्तरंग साधन माना गया है। इनका विवरण निम्न है:-

1. यम - इसका आशय मन को संयमपूर्ण रखने से है। बाह्य इन्द्रियों पर संयम
2. नियम - सत्य, अहिंसा, अस्तेय का पालन नियम है।
3. आसन - आसन से आशय शरीर को विशेष स्थिति में रखकर ध्यान केन्द्रित करना है।
4. प्राणायाम - श्वास - निश्वास के माध्यम से श्वास को स्थिरता प्रदान करना। इससे मन के मल धुलते हैं।
5. प्रत्याहार - अशुभ विचारों को मन में आने से रोकना एवं शुभ विचारों से मन को भरना प्रत्याहार है।

अवधारणात्मक त्रुटियों से बचें

योग के बहिरंग साधन:

योग के बहिरंग साधन का कैवल्य प्राप्ति में विशेष योगदान है। ये हैं:-

1. धारणा - शुभ विचारों का निरन्तर स्मरण धारणा है।
2. ध्यान - किसी विषय पर निरंतर मन को एकाग्र करना ध्यान है।
3. समाधि - समाधि का आशय है - मन को एकाग्र करना। इसमें साधक ज्ञान के विषय में पूर्णत: लीन हो जाता है। समाधि के 2 भेद हैं:-
   क) सम्प्रज्ञात (सबीज) समाधि - इसमें साधक को ध्यान के विषय का स्पष्ट ज्ञान रहता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

ध्यान के विषय की बदलती प्रकृति के आधार पर इसे सवितर्क (स्थूल विषय) सविचार (सूक्ष्म विषय) ~~[illegible]~~ सानंद (सूक्ष्म विषय) सस्मित (अहंकार) भागों में बांटा गया है।

(ख) <u>असम्प्रज्ञात (निर्बीज)</u> :- इसमें ज्ञाता-ज्ञेय भेद समाप्त हो जाता है। पुरुष प्रकृति के सभी विकारों से मुक्त हो जाता है। यही कैवल्य या मोक्ष की अवस्था है।

निष्कर्षतः योग के अंतरंग साधन जहाँ व्यावहारिक हैं वहीं बहिरंग साधनों का पालन कैवल्य के लिए अत्यावश्यक है।

(2)

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	0.25	1	0.5	0.25	–	0	✓
Grade	B	C	D	C	–	D	–

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(e) सांख्य में वर्णित 'दुःख' की अवधारणा पर चर्चा कीजिये।

Discuss the suffering described in Sankhya.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सांख्य मतानुसार यह संसार दुःख पूर्ण है। संसार में मूलतः 3 प्रकार के दुःख पाये जाते है :-

क) आध्यात्मिक दुःख :- जीवन का जन्म-मरण के चक्र में पड़े रहना ही आध्यात्मिक दुःख है

शारीरिक और मानसिक क्रियाओं से प्राप्त दुःख

ख) अधिभौतिक दुःख :- संसार में भौतिक तत्वों के कारण होने वाला दुःख आधिभौतिक दुःख है। उदाहरण: तीर का चुभना

ग) आधिदैविक दुःख :- भूत-प्रेत, पारमार्थिक अलौकिक सत्ताओं की वजह से होने वाला दुःख आधिदैविक दुःख है।

सांख्य मतानुसार जीवन में इन त्रिविध दुःखों की उपस्थिति ही बंधन है। इसका मूल कारण अविद्या है जिसके कारण पुरुष, प्रकृति से अपनी भिन्नता को जान नहीं पाता है। जीवन में इन त्रिविध दुःखों की समाप्ति ही मोक्ष है, जो विद्या या तत्वज्ञान से ही संभव है। पुरुष द्वारा प्रकृति से अपनी भिन्नता का ज्ञान होने पर ही इन त्रिविध दुःखों की समाप्ति संभव है।

भारतीय दर्शन में दुःख सम्बंधी अन्य विचारों से तुलना भी करें।

2 1/2

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (a) बुद्ध का कारणतावादी सिद्धांत सापेक्षतावादी सिद्धांत है जो मध्यम मार्ग का अनुसरण करता है? चर्चा करें। 20

The causation theory of Buddha is a Relativistic theory which follows middle path? Discuss. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बुद्ध का कारणतावादी सिद्धांत प्रतीत्यसमुत्पाद है जिसके अनुसार कार्य की उत्पत्ति कारण पर निर्भर होकर एवं कारण की अपेक्षा से होती है। इस प्रकार प्रतीत्यसमुत्पाद सापेक्षवादी सिद्धांत है क्योंकि यह कार्य की उत्पत्ति को कारण सापेक्ष मानता है।

प्रतीत्यसमुत्पाद बौद्ध-दर्शन के क्षणिकवाद, अनात्मवाद, अनित्यवाद एवं कर्म-नियम की व्याख्या हेतु महत्वपूर्ण है।

प्रतीत्यसमुत्पाद वस्तुतः मध्यम मार्ग का अनुसरण करता है क्योंकि

1. सांख्य के सत्कार्यवाद के अनुसार कार्य कोई नवीन उत्पत्ति नहीं है अपितु जो कारण में अव्यक्त था, उसी का व्यक्त होना कार्य है। इसके विपरीत न्याय-वैशेषिक का असत्कार्यवाद कार्य को एकदम नवीन उत्पत्ति मानता है।

बौद्ध का कारणतावादी सिद्धांत मध्यम मार्ग का अनुसरण करता है जिसके अनुसार कार्य की उत्पत्ति कारण पर निर्भर होकर एवं कारण की अपेक्षा से होती है। कार्य, कारण सापेक्ष है।

II. शंकर मतानुसार नित्यता ही सत् है, परिवर्तन भ्रम है। इसके विपरीत उच्छेदवाद, चार्वाक, निहत्वाद विनाश को ही सत् मानते हैं, नित्यता भ्रम है।

बौद्ध दर्शन के कारणतासिद्धांत पर आधारित अनित्यवाद व क्षणिकवाद परिवर्तन को ही सत् मानते हैं। इसके अनुसार विश्व की प्रत्येक वस्तु केवल अनित्य ही नहीं अपितु

'प्रतीत्य' - किसी वस्तु की उपस्थिति में
'समुत्पाद' - किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति होना

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परिवर्तनशील है।

(iii) बौद्ध मताकुसार

अस्मिन् सति इदं भवति, अस्मिं असति इदं न भवति।
अर्थात् जब तक कारण है तभी कार्य की उत्पत्ति होती है। कारण के विनष्ट होते ही कार्य की उत्पत्ति नहीं हो सकती।
इससे स्पष्ट है कि बौद्ध मतानुसार कारण कार्य सापेक्ष है। बौद्ध का यह मत सत्कार्यवाद व असत्कार्यवाद के मध्य की स्थिति है।

पुनरावृत्ति से बचें / सत्कार्यवाद असत्कार्यवाद के मध्य का सिद्धांत पहले ही बताया जा चुका है।

(iv) भारतीय दर्शन में न्याय-वैशेषिक, वेदान्त आदि में आत्मा को नित्य, शाश्वत अमर व अपरिवर्तनशील माना गया है, वहीं दूसरी ओर चार्वाक का देहात्मवाद शरीर के विनाश के साथ ही आत्मा के विनाश की बात करता है।
बौद्ध का द्वादशनिदान पर आधारित प्रतीत्यसमुत्पाद जो तीनों कालों को जोड़कर कर्मवाद की स्थापना करता है, इन दोनों के मध्य के मार्ग का अनुसरण करता है जिसके अनुसार हालांकि नित्य, शाश्वत, अमर, अपरिवर्तनशील आत्मा का अस्तित्व नहीं है परन्तु आत्मा विज्ञानों का एक ~~परिवर्तनशील~~ अविछिन्न प्रवाह है। वर्तमान जीवन के अंतिम छोर में इन विज्ञानों के अविछिन्न प्रवाह का हस्तान्तरण अगले जन्म में उसी प्रकार संभव है जिस प्रकार बुझते दीपक से एक नया दीपक जलाना संभव है। इस प्रकार द्वादशनिदान आधारित प्रतीत्यसमुत्पाद के आधार पर बौद्ध

अनावश्यक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नित्य, शाश्वत, अपरिवर्तनशील आत्मा को न मानते हुए भी कर्मफल एवं पुनर्जन्म की व्याख्या में सफलीभूत हो पाते हैं।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि बुद्ध का अनात्मवादी सिद्धांत एक सापेक्षतावादी सिद्धांत है जो मध्यम मार्ग का अनुसरण करता है।

5

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	0.25	2	2	0.25	–	-	✓
Grade	B	C	C	C	–	–	–

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) चार्वाक आगे के दरवाज़े से अनुमान को निष्क्रमित कर स्वयं उसे पीछे के दरवाज़े से अंदर बुला लेते हैं? चर्चा करें? 15

Rejecting inference from the front door, Charvaka himself calls it inside though back door? Discuss. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

चार्वाक एक नास्तिक, अनीश्वरवादी, प्रत्यक्षवादी एवं जड़वादी दर्शन है जो प्रत्यक्ष को ही निश्चित, प्रामाणिक एवं वैध ज्ञान प्रदान करने के कारण एकमात्र प्रमाण मानता है तथा प्रत्यक्षगम्य न होने के कारण सभी अतीन्द्रिय सत्ताओं का खंडन करता है।

अन्य सभी प्रमाणों का खंडन

चार्वाक अनुसार अनुमान अप्रामाणिक है क्योंकि व्याप्ति, जो कि अनुमान का प्राण एवं तार्किक आधार है, कि निश्चयात्मक सिद्धि किसी भी प्रकार से नहीं हो पाती है।

चार्वाक मतानुसार व्याप्ति की सिद्धि प्रत्यक्ष से करने पर अवैध सामान्यीकरण दोष, अनुमान से करने पर चक्रक एवं अनावस्था दोष, शब्द, कारणता-सिद्धांत आदि से करने पर भी चक्रक दोष उत्पन्न होता है।

कारणता सिद्धांत स्वयं एक प्रकार की व्याप्ति है। इससे अनवस्था दोष उत्पन्न होता है।

स्पष्ट है कि चार्वाक मतानुसार चूँकि व्याप्ति की निश्चयात्मक सिद्धि किसी भी प्रकार से नहीं हो सकती अतः अनुमान अप्रमाणिक है।

परन्तु चार्वाक का अनुमान का उपरोक्त खंडन स्वयं एक प्रकार का अनुमान है। इसे निम्न रूप से स्पष्ट किया जा सकता है :-

(i) चार्वाक का यह कथन कि "अनुमान अप्रमाणिक है क्योंकि वह अप्रत्यक्षगम्य है" स्वयं एक प्रकार से अनुमान है क्योंकि चार्वाक अप्रत्यक्ष गम्य होने के कारण अनुमान की अप्रामाणिकता का अनुमान है।

इसे निम्न न्यायमुक्ति द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है:-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जो भी अप्रत्यक्षगम्य है, अप्रमाणिक है।
अनुमान अप्रत्यक्षगम्य है।
अतः अनुमान अप्रमाणिक है।

(iii) जैन मतानुसार चार्वाक का यह कथन कि "निश्चित, प्रामाणिक एवं वैध ज्ञान" प्रदान करने के कारण प्रत्यक्ष ही एकमात्र प्रमाण है स्वयं एक प्रकार का अनुमान है। क्योंकि चार्वाक कुछ ही प्रत्यक्षों के निश्चित, प्रामाणिक व वैध ज्ञान प्रदान करने के आधार पर सभी प्रत्यक्षों द्वारा ऐसा ज्ञान प्रदान करने का अनुमान कर लेते हैं।

(iv) बौद्ध-महायान शाखा के अनुसार बाह्य वस्तुओं का ज्ञान प्रत्यक्ष के बजाय अनुमान से प्राप्त होता है (बाह्य अनुमेयवाद)। चूँकि चार्वाक बाह्य वस्तुओं की सत्ता में विश्वास करता है अतः वह अनुमान को मानने हेतु बाध्य है।

व्याप्ति का खण्डन स्वयं अतिव्यापक निष्कर्ष है। यहाँ भी अवैध सामान्यीकरण का दोष उत्पन्न होता है।

(v) चार्वाक अपने मत के मंडन एवं अन्य मतों के खंडन में तर्क का सहारा लेता है। तर्क व विचार मानसिक तत्व हैं। इनका प्रत्यक्ष असंभव है। चार्वाक अन्य मतों के खंडन के क्रम में उनके विचारों के आधार पर उनके मतों का अनुमान करता है एवं फिर उनका खंडन करता है। चार्वाक तर्क-वितर्क एवं विचार को मानता है। इस रूप में वह अनुमान को स्वीकार करने हेतु बाध्य है।

(vi) तत्वमीमांसीय सत्ताओं के खंडन के क्रम में भी चार्वाक अप्रत्यक्षगम्य होने के कारण उनके अभाव का अनुमान करता है।
यथा- जो भी अप्रत्यक्षगम्य है, उसकी सत्ता नहीं है।
आत्मा अप्रत्यक्षगम्य है
अतः आत्मा की सत्ता नहीं है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्पष्ट है कि चार्वाक आगे से दरवाजे से अनुमान
को निष्कासित कर पीछे के दरवाजे से अनुमान को
अंगीकार करता होते हैं।

5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	0.25	2	2	0.25	—	0.5	
Grade	B	B	B	C	—	A	

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(c) क्या सांख्य एक तरफ सत्कार्यवाद तो दूसरी तरफ प्रकृति परिणामवाद को मानकर परस्पर विरोधी अवधारणाओं की स्थापना कर देता है। परीक्षण कीजिये। 15

Does Sankhya by considering the Prakrati Parinamvad on one hand and Satkaryavada on the other hand establishes contradictory concepts. Examine. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सांख्य के कारणता संबंधी सिद्धांत सत्कार्यवाद के अनुसार कार्य अपनी उत्पत्ति से पूर्व कारण में विद्यमान रहता है। अर्थात जो कारण में अव्यक्त अवस्था में था, ~~उसी का व्यक्त~~ वह कार्य में व्यक्त हो जाता है। सत्कार्यवाद कार्य को नवीन उत्पत्ति नहीं मानता है।

सत्कार्यवाद के 2 भेद हैं :-

(क) परिणामवाद - यह ~~कार्य~~ कारण से कार्य की उत्पत्ति को वास्तविक परिणाम मानता है।

(ख) विवर्तवाद - इसके अनुसार कार्य, कारण का वास्तविक परिणाम न होकर विवर्त मात्र है।

सांख्य प्रकृति परिणामवाद को स्वीकार करता है जिसके अनुसार प्रकृति के सूक्ष्म रूपों का ही स्थूल रूपों में जगत के रूप में रूपान्तरण होता है। जगत प्रकृति का परिणाम है।

सांख्य द्वारा प्रकृति परिणामवाद को अपनाने के कारण इस पर यह आक्षेप है कि यह सत्कार्यवाद का खंडन है क्योंकि सत्कार्यवाद व प्रकृति परिणामवाद परस्पर विरोधात्मक है। इसे इस रूप में स्पष्ट किया जा सकता है :-

(i) शंकर के मतानुसार जगत को प्रकृति का परिणाम मानने के कारण सांख्य सत्कार्यवाद का उल्लंघन करता है क्योंकि जगत को सत मानने के कारण इसमें आकार की नवीनता को स्वीकार करना पड़ेगा। परन्तु सत्कार्यवाद कार्य को नवीन उत्पत्ति न

सत्कार्यवाद को स्पष्ट रूप से समझाएँ।
उत्पत्ति = आविर्भाव
विनाश = तिरोभाव

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मानकर केवल कारण में जो अव्यक्त था, उसी का व्यक्त रूप मानता है। जगत को सत् मानकर सांख्य आकार की नवीनता को स्वीकार करने हेतु बाध्य है, इस रूप में प्रकृति परिणामवाद सत्कार्यवाद का विरोधी है।

(ii) न्याय-वैशेषिकों के अनुसार कारण व कार्य में भेद का होना यह स्पष्ट करता है कि कार्य, कारण का परिणाम न होकर एक नवीन उत्पत्ति है। कार्य को कारण में उपस्थित नहीं माना जा सकता।

(iii) शंकराचार्य के मतानुसार यदि जगत को ब्रह्म का वास्तविक परिणाम न मानकर केवल विवर्त मात्र माना जाए तो ऐसा मानना सत्कार्यवाद के संगत होगा क्योंकि इस स्थिति में कार्य में किसी भी प्रकार की नवीनता को मानना आवश्यक नहीं होता।

स्पष्ट है कि जहां सत्कार्यवाद कार्य को एक नवीन उत्पत्ति नहीं मानता है वहीं सांख्य, प्रकृति-परिणामवाद को मानने के कारण जगत में आकार की नवीनता को मानने हेतु बाध्य है। इस प्रकार सांख्य एक तरफ सत्कार्यवाद तो दूसरी तरफ प्रकृति-परिणामवाद को मानकर परस्पर विरोधी अवधारणाओं की स्थापना कर देता है।

(4)

आचार्य शंकर की आलोचना का सांख्य के दृष्टिकोण से प्रत्युत्तर दें। कार्य-कारण तात्त्विक रूप से अभिन्न केवल अवस्था का भेद

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - B / SECTION - B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दें: 10 × 5 = 50

Answer the following in about 150 words each:

(a) जैन मत में धर्म और अधर्म की कल्पना।

Imagination of Dharma and Adharma in Jainism.

जैन मत में द्रव्य के दो भेद माने गये है-
अस्तिकाय व अनस्तिकाय। पुनः अस्तिकाय द्रव्य
को दो भागों में बाँटा गया है-
क) जीव (चेतन) — जीव
ख) अजीव (अचेतन) - धर्म, अधर्म, पुद्गल, आकाश
अतः
क) धर्म :- धर्म एक अस्तिकाय अचेतन द्रव्य है।
जैन मतानुसार किसी वस्तु/सत्ता को गतिशील करने
वाला तत्व ही उसका धर्म है।
उदाहरणतः जल, मछली को गतिशील करने
वाला तत्व है अतः यह मछली हेतु
धर्म है।
- धर्म सक्रियता व गतिशीलता का तत्व है। यह
क्रियाप्रेरक है।
ख) अधर्म - धर्म की भाँति अधर्म भी अस्तिकाय
अचेतन द्रव्य है।
जैन मतानुसार किसी वस्तु या सत्ता में शिथिलता व
स्थिरता लाने वाले तत्व उसका अधर्म है।
उदाहरणतः पेड़ की छाया
- अधर्म निष्क्रियता व गतिहीनता का प्रेरक तत्व है।
जैन मतानुसार धर्म व अधर्म दोनों गुण की दृष्टि
से नित्य है तथा पर्याय की दृष्टि से विनाश व
उत्पत्ति से युक्त है। धर्म व अधर्म, जीव व पुद्गल के साथ आकाश में अवस्थित है।

धर्म और अधर्म को द्रव्य की श्रेणी में क्यों रखा गया?

5

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(b) बौद्ध दर्शन में 'भव' की अवधारणा का क्या महत्त्व है?

What is the importance of the idea of 'Bhava' in Buddhism?

बौद्ध दर्शन में 'भव' का संबंध तीनों कालों के चक्र से है। भव स्वतः 12 है जो तीनों कालों में विभाजित है।

क्योंकि भव का पूर्ववर्ती उसका कारण है। भव का कारण स्वतः उसके पूर्वजन्म के कर्मफलों का आगामी जन्म में हस्तानान्तरण है।

भव के किसी भी रोग की समाप्ति पर बंधन से मुक्ति पायी जा सकती है। भव अविद्या से आरंभ होकर जरामरण तक जाता है। भव के इस चक्र को द्वादश निदान के नाम से जाना जाता है।

महत्व

1. पुनर्जन्म व पूर्वजन्म की व्याख्या
2. कारणता की व्याख्या
3. कर्मनियम व कर्मफल की व्याख्या
4. बंधन व मोक्ष की प्राप्ति में भूमिका

अवधारणात्मक त्रुटियों से बचें। 'भव' द्वादश निदान की एक कड़ी है। मॉडल उत्तर देखें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(c) सांख्य की प्रकृति-पुरुष संबंध की असंगतियों को योग ने दूर करने का प्रयास किया है।

Yoga has tried to remove the inconsistencies in the relation of Prakriti-Purush of Sankhya.

सांख्य प्रकृति - पुरुष संबंध की शुरुआत से अंत तक संगत व्याख्या नहीं कर सका है क्योंकि :-

क) सांख्य द्वारा प्रकृति - पुरुष संबंध की व्याख्या हेतु दी गई अंधे व लंगड़े की उपमा में दोनों चेतन एवं दूध व गाय की उपमा में दूध गाय के वात्सल्य के नाते प्रवाहित होता है। परंतु प्रकृति व पुरुष दोनों की प्रकृति परस्पर विरोधात्मक है, अतः उनमें समन्वय नहीं हो सकता।

ख) यदि प्रकृति-पुरुष के संबंध को यदि वास्तविक माना जाए तो ऐसा मानना सत्कार्यवाद के विरुद्ध होगा। सामीप्य मानने पर प्रलय की व्याख्या नहीं हो पायेगी क्योंकि निष्क्रिय होने के कारण वियोग नहीं हो पायेगा। संयोग मानने पर ~~अनवस्था दोष~~ एवं विकासवाद संयोग मात्र हो जाएगा जो प्रकृति - परिणामवाद के विरुद्ध होगा।

योग-दर्शन में प्रकृति - पुरुष की इन विरोधात्मक प्रवृत्तियों से मुक्ति पाने हेतु निमित्त - कारण के रूप में ईश्वर को स्वीकार किया गया है। योग मतानुसार चूँकि प्रकृति व पुरुष परस्पर विरोधात्मक प्रवृत्ति के हैं अतः उनमें संयोग प्राकृतिक रूप से संभव नहीं है। ईश्वर प्रकृति व पुरुष में संयोग कराकर विकासवाद में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस प्रकार योग ने सांख्य की इस दुविधा को दूर करने का प्रयास किया है।

परन्तु योग द्वारा निमित्त कारण के रूप में ईश्वर

(सांख्य दर्शन के द्वैतवाद के परिचय से उत्तर प्रारम्भ करें। प्रकृति-पुरुष संबंध हेतु जो दृष्टांत दिये गये हैं, उनका उल्लेख करें।)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

को स्वीकारना व उसे सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता, संहारकर्ता न मानना ईश्वर के महत्व को कम करता है

योग ईश्वर को केवल साधन के रूप में स्वीकार करता है। कर्ता, धर्ता और संहारक के रूप में नहीं।

2½

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	0.25	1.5	0.5	0.25	–	0	–
Grade	B	B	D	D	–	D	–

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(e) चार्वाक ईश्वर और आत्मा के खंडन के क्रम में प्रत्यक्ष कि सीमा का अतिक्रमण कर देते हैं। चर्चा करें।

In order to deny God and soul charvaka transcends the limitations of perception. Discuss.

चार्वाक मतानुसार चूंकि ईश्वर एवं आत्मा की रूप व आकारविहीन होने के कारण प्रत्यक्ष द्वारा ज्ञानप्राप्ति असंभव है अतः इनकी सत्ता नहीं है।

चार्वाक मतानुसार देह के विनाश के साथ ही आत्मा का विनाश हो जाता है। नित्य, अमर, शाश्वत आत्मा का अस्तित्व नहीं है। परन्तु चार्वाक का ऐसा मानना प्रत्यक्ष की सीमा का खंडन है क्योंकि चार्वाक अप्रत्यक्षग्राह्य होने के कारण आत्मा के अभाव का अनुमान करते हैं। इस रूप में वे अनुमान की मदद लेते हैं। उदाहरणतः

1. जो प्रत्यक्षग्राह्य है, उसी का अस्तित्व है।
2. नित्य, शाश्वत, अमर, अपरिवर्तनशील आत्मा का प्रत्यक्ष नहीं होता है।
3. अतः आत्मा का अस्तित्व नहीं है।

ख) चार्वाक आत्मा व ईश्वर के खंडन हेतु तर्क व विचार की सहायता लेते हैं। तर्क व विचार दोनों मानसिक तत्व हैं। दोनों मानसिक होने के कारण अभौतिक हैं परन्तु चार्वाक अभौतिक सत्ता के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता। इस प्रकार तर्क व विचार के आधार पर ईश्वर व आत्मा के खंडन हेतु चार्वाक अनुमान का उपयोग कर प्रत्यक्ष का अतिक्रमण करता है।

ग) ईश्वर के खंडन में अनुमान के प्रयोग को निम्न-पाप्युक्ति द्वारा दर्शाया जा सकता है। 1. जो रूप, आकार से विहीन है, उसका प्रत्यक्ष असंभव है। 2. ईश्वर रूप, आकार से विहीन है। 3. अतः ईश्वर का प्रत्यक्ष असंभव

सामान्यतः भारतीय दर्शन में ईश्वर और आत्मा को शब्द अनुमान प्रमाण से सिद्ध किया गया है जबकि चार्वाक शब्द व अनुमान प्रमाण का खंडन करते हैं।

2½

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) योग की पाँच चित्त-भूमियों को स्पष्ट करें। 15

Explain the five chitta-bhoomi of Yoga. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

योग मतानुसार चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है। यहाँ चित्त से आशय प्रकृति के तीन विकारों - बुद्धि, अहंकार, मनस के संयुक्त रूप से है।

चूंकि प्रकृति से आविर्भावित होने के कारण, चित्त त्रिगुणात्मक अर्थात सत्व, रजस व तम गुणों से युक्त है। ये गुण निरन्तर बदलते रहते हैं। गुणों की निरन्तर बदलती प्रवृत्ति के कारण चित्त भिन्न प्रकार की मानसिक अवस्थाओं से युक्त होता है, चित्त की ये मानसिक-अवस्थाएँ ही चित्तभूमि कहलाती हैं। ये 5 हैं:-

क) क्षिप्त - यह चित्त की रजोगुण-प्रधान अवस्था है। इसमें मन अत्यंत चंचल एवं सक्रिय होता है फलतः योग के दृष्टिकोण से यह अनुपयुक्त है क्योंकि ऐसी स्थिति में ध्यान असंभव है।

ख) विक्षिप्त - यह चित्त की तमोगुण-प्रधान अवस्था है। यह निद्रा, आलस्य व निष्क्रियता की अवस्था है। पुनः यह भी ध्यान के लिए अनुपयुक्त है।

ग) मूढ़ - चित्त की इस अवस्था में सत्व गुण प्रधान होता है, परन्तु रजस भी सक्रिय रहता है। हालांकि मन किसी वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करने की कोशिश करता है, परन्तु अधिक देर तक नहीं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कर पाता क्योंकि रजस् सक्रिय रहता है।

4) निरुद्ध - चित्त की इस भूमि में सत्व-गुण प्रधान रहता है। यह योग के लिए अनुकूल अवस्था है। इसमें चित्त किसी विषय पर अधिक देर तक ध्यान लगाने में समर्थ होता है।

5) एकाग्र - चित्त की यह भूमि योग का सर्वोत्कृष्ट रूप है। इसमें साधक ध्यान के विषय में पूर्ण लीन हो जाता है एवं अंततः ज्ञाता-ज्ञेय भेद समाप्त हो जाता है। यह कैवल्य या मोक्ष की अवस्था है।

असाधारण अवस्थाएँ

चित्त की अंतिम दो भूमियाँ योग हेतु सर्वाधिक अनुकूल है। 'निरुद्ध' की अवस्था सम्प्रज्ञात (सबीज) समाधि एवं एकाग्र असम्प्रज्ञात (निर्बीज) समाधि की अवस्था है।

"एकाग्र" अवस्था में "चित्त को जो प्राप्त हो सकता था, वह प्राप्त हो चुका है, तथा जो क्षीण होना था, वह पूर्ण क्षीण हो चुका होता है"।

स्पष्टतः चित्त-भूमि की यह सिद्धांत व्यावहारिक है, जिसकी वर्तमान दौर में व्यापक उपयोगिता है।

6

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(c) जैनियों के 'सापेक्षतावाद' की अंतिम परिणति एकान्तवाद में होती है? समालोचना करें? 15

The ultimate culmination of the 'Relativism' of the Jains is in Ekantavaad? Critically discuss. 15

जैनियों के सत्तामीमांसीय सिद्धांत - अनेकांतवाद की ज्ञानमीमांसीय अभिव्यक्ति - स्यादवाद, ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धांत है। इसके अनुसार हमारा ज्ञान आंशिक, अपूर्ण एवं सापेक्षतः सत्य होता है, इसी कारण स्यादवाद को सापेक्षतावाद भी कहा जाता है।

अनेकांतवाद के अनुसार इस संसार में प्रत्येक वस्तु व भौतिक पदार्थ के अनेक गुण हैं। साधारण मनुष्य इनमें केवल कुछ ही गुणों का ज्ञान प्राप्त कर सकता। अतः उनका ज्ञान आंशिक, सापेक्ष एवं अपूर्ण होता है। इस ज्ञान के आधार पर वह जो निर्णय लेता है, 'नय' कहलाता है। परन्तु नय को प्रमाण नहीं कहा जा सकता क्योंकि इसमें ज्ञान की आंशिकता व सापेक्षता स्वतः प्रकाशित नहीं होती है, परन्तु यदि इस नय के पीछे 'स्यात्' शब्द जोड़ दिया जाए तो प्राप्त ज्ञान प्रमाण कहलाता है क्योंकि उस स्थिति में आंशिकता व सापेक्षता का पूर्ण प्रकाशन हो पाता है। जैन मतानुसार ज्ञान दृष्टि से किसी विषय के संदर्भ में अधिकाधिक 7 नय संभव है, इसी कारण स्यादवाद की अभिव्यक्ति 'सप्तभंगी' नय में होती है।

वस्तुवादी भी है। ज्ञेय की सत्ता को ज्ञाता से पृथक मानने के कारण से वस्तुवाद की

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैनियों के सापेक्षतावाद की अंतिम परिणति एकान्तवाद में होती है क्योंकि

1) जैन मतानुसार साधारण मनुष्य देश, काल, परिस्थिति, आदि में सीमित होने के कारण वस्तु को सम्पूर्णता में ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। केवल कैवली ही वस्तु का सम्पूर्णत्व में ज्ञान प्राप्त कर सकता है। कैवली इन वस्तु के संदर्भ में सप्तभंगी नयों को जान सकता है। वस्तु के सम्पूर्ण या एकान्त स्वरूप का ज्ञान सप्तभंगी नयों के ज्ञान से ही संभव है। अतः परमतत्व (कैवली) के स्तर पर सापेक्षतावाद समाप्त हो जाता है एवं एकान्तवाद स्थापित हो जाता है।

इस संदर्भ में जैनियों का प्रसिद्ध कथन है कि "वह जो एक चीज को भली-भाँति जानता है, वह सभी को भली-भाँति जानता है तथा केवल वही जो सभी चीजों को जानता है, किसी चीज को भली-भाँति जानता है"। स्पष्ट है कि यह केवल परमतत्व या कैवली स्तर पर ही संभव है।

आलोचना

- जैन दर्शन का सापेक्षतावाद, निरपेक्षता का स्वीकार नहीं करता परन्तु बिना निरपेक्ष को माने सापेक्ष का स्वीकार नहीं किया जा सकता।
- जैन कैवली के स्तर पर सापेक्षता के अनुपस्थिति की बात करता है। यह अप्रत्यक्ष रूप से निरपेक्ष की स्वीकृति है। निरपेक्ष के आधार पर एकान्त की स्थापना जैन के सापेक्षतावाद व अनेकान्तवाद के विरुद्ध है।
- जैन स्याद्वाद को मानने के बावजूद अपने ही मत को एकमात्र सत् मानता है, ऐसा मानना स्वयं स्याद्वाद के विरुद्ध है।

अन्य सभी मतों का परीक्षण अनेकांतवाद के आधार पर करता है और स्वयं को ही सर्वोत्कृष्ट मानकर एकांतवाद का समर्थक हो जाता है।

3

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

8. (a) प्रतीत्यसमुत्पाद बौद्धों का केन्द्रीय सिद्धान्त है। इसके परिप्रेक्ष्य में वस्तुवादी, विज्ञानवादी और शून्यवादी अवधारणाओं की तुलना कीजिये। 20

Pratityasamutpada is a basic principle of Buddhism. In its perspective compare the realistic, idealistic and nihlistic theories. 20

प्रतीत्यसमुत्पाद के परिचय से उत्तर प्रारम्भ करें

बौद्ध दर्शन के केन्द्रीय सिद्धांत प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुसार कार्य की उत्पत्ति कारण पर निर्भर होकर अर्थात कारण की अपेक्षा से होती है। ~~[illegible]~~ कार्य, कारण सापेक्ष है।

बौद्ध का कारणता संबंधी यह मत सापेक्षतावादी सिद्धांत है क्योंकि जिस प्रकार दीपक के लौ की उत्पत्ति तेल, बत्ती, आदि के सापेक्ष है, उसी प्रकार कार्य की उत्पत्ती भी कारण पर निर्भर होकर होती है।

प्रतीत्यसमुत्पाद की बौद्ध-धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों द्वारा भिन्न-भिन्न व्याख्या की गई है। सौत्रांतिक

(क) वस्तुवादी अवधारणा :- सौतांत्रिक एवं वैभाषिकों के अनुसार कारण एवं कार्य ~~[illegible]~~ परस्पर भिन्न, पृथक एवं स्वतंत्र है। कार्य की उत्पत्ति कारण पर निर्भर होकर वास्तव में होती है। कारण एवं कार्य दोनों सत् है।

(ख) विज्ञानवादी अवधारणा :- बौद्ध महायान के विज्ञानवाद संप्रदाय के अनुसार विज्ञान ही एकमात्र सत् है, केवल विज्ञानों की ही एकमात्र सत्ता है, जो भी है, विज्ञान है। शून्यवाद के विपरीत जिसने चित् व अचित् दोनों को असत् माना है, योगाचार विज्ञानवाद चित् को सत् मानते है। योगाचार विज्ञानवाद के अनुसार कारण पर आधारित होकर कार्य की उत्पत्ती वास्तव में नहीं होती है क्योंकि बाह्य-भौतिक पदार्थ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

असत् है। केवल विज्ञानों की ही ~~एकमात्र~~ सत्ता है।
योगाचार के अनुसार नीले रंग एवं नीले रंग की संवेदना में कोई अंतर नहीं है।

(१) <u>शून्यवादी अवधारणा</u> – महायान का शून्यवादी सम्प्रदाय में शून्यता का आशय वस्तुओं का निषेध न होकर उसकी अनिर्वचनीयता से है। शून्यवाद के अनुसार परमतत्व अनिर्वचनीय है, वह बुद्धि की चतुष्कोटि से परे है। शून्यवाद चित्त व अचित् दोनों को असत् मानता है
शून्यवाद के अनुसार प्रतीत्यसमुत्पाद भी शून्यता है जिसके अनुसार कार्य की उत्पत्ति कारण पर निर्भर एवं सापेक्षिक है। शून्यवाद के अनुसार वस्तुएँ परनिर्भर एवं सापेक्षिक (Conditional & Relative) है। पारमार्थिक दृष्टिकोण से जगत असत् है, इस रूप में कारण व कार्य दोनों असत् है।
स्पष्ट है कि प्रतीत्यसमुत्पाद की भिन्न-भिन्न संप्रदायों द्वारा भिन्न-भिन्न व्याख्या की गई है।

व्यावहारिक दृष्टि से प्रतीत्य-समुत्पाद जगत और उसके हेतु का परिचायक है। पारमार्थिक दृष्टि से अष्टनिषेधों से युक्त अजातिवाद है।

6½

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) चित्त-वृत्तियाँ केवल बंधन के लिये ही उत्तरदायी नहीं हैं अपितु मुक्ति में भी सहायक हो सकती हैं। परीक्षण करें। 15

Chitta-Vritti not only liable for bondage but it is also helpful in liberation. Examine. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

योग मतानुसार चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है। वस्तुतः चित्त प्रकृति के तीन विकारों - बुद्धि, अहंकार एवं मनस का संयुक्त रूप है। इसके तीन भेद हैं - प्रवृत्तिशील (रजस), प्रख्याशील (सत्व) एवं स्थितिशील (तमोगुण) चित्त।

प्रकृति से आविर्भावित होने के कारण चित्त मूलतः अचेतन है परन्तु जब प्रकृति का सान्निध्य पुरुष से होता है तो चित्त विषयों का आकार ग्रहण कर लेता है। चित्त द्वारा विषयों का आकार ग्रहण करना ही चित्तवृत्ति है। ये मूलतः 5 हैं -

क) प्रमाण - जिन चित्तवृत्तियों से यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति होती है। ये तीन हैं - प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द

ख) विपर्यय - यह चित्तवृत्ति मिथ्याज्ञान या भ्रांतिमूलक ज्ञान का कारण है। उदा. रस्सी में सर्प का ज्ञान

ग) विकल्प - विषय के अनुरूप वास्तव में वस्तु की सत्ता का न होना, विकल्प है। यथा - बंध्यापुत्र

घ) निद्रा - यह सुषुप्ति की अवस्था है। इस चित्तवृत्ति में मानसिक विकास नहीं होता परन्तु मानसिक विकास के अभाव का ज्ञान रहता है। उदा. गहरी नींद से जागने पर यह भाव कि गहरी नींद आयी।

ङ) स्मृति - स्मृति संस्कारजन्य ज्ञान है। पूर्व में बात का स्मरण ही स्मृति है।

चित्तवृत्तियों का वर्गीकरण क्लिष्ट एवं अक्लिष्ट के रूप में भी किया जा सकता है। क्लिष्ट चित्तवृत्तियाँ वे चित्तवृत्तियाँ हैं जिनसे क्लेशों का उपार्जन होता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

है ये चित्तवृत्तियाँ वस्तुतः पुरुष के दुःखों एवं जन्म-मरण के चक्र में पड़े रहने का कारण है। इनमें विपर्यय, विकल्प आदि को शामिल किया जा सकता है। इन्हीं के कारण पुरुष अपने स्वभाव को भूलकर स्वयं को सीमित, अक्रिय समझने लगता है।

दूसरी ओर अक्लिष्ट चित्तवृत्तियां वे है जिनसे अज्ञान एवं अविद्या के निराकरण में मदद मिलती है। प्रमाण इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। चूंकि अविद्या व अज्ञान का निराकरण विद्या व ज्ञान से ही संभव है अतः प्रमाण के द्वारा यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति कर पुरुष, प्रकृति से अपने भिन्न स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर सकता है, इसी तत्वज्ञान की प्राप्ति पुरुष का मोक्ष है।

मोक्ष प्राप्ति हेतु अभ्यास, वैराग्य एवं अष्टांग मार्ग में भी स्मृति एवं प्रमाण चित्तवृत्तियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। स्पष्टतः बंधन के साथ-साथ मुक्ति में भी चित्तवृत्तियां महत्वपूर्ण सहायक है।

पाँचों चित्त वृत्तियाँ पुरुष के बंधन का कारण है क्लिष्ट चित्तवृत्तियाँ। पाँचों चित्तवृत्तियाँ पुरुष में विवेकख्याति के लिए सहायक हो सकती हैं। (अक्लिष्ट चित्तवृत्तियाँ)

6½

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(c) जैन दर्शन, बौद्ध एवं अद्वैत वेदांत के तत्वमीमांसीय मतों को अस्वीकार क्यों करते हैं? 15

Why Jaina philosophy rejects metaphysical views of Buddhism and Advait Vedanta? 15

जैन दर्शन के सत्तामीमांसीय सिद्धांत अनेकांतवाद के अनुसार इस संसार में अनेक जीव एवं अनेक भौतिक पदार्थ है तथा प्रत्येक जीव व भौतिक पदार्थ के अनेक गुण है। इस प्रकार जैन तत्वमीमांसा के क्षेत्र में बहुतत्ववादी सापेक्षतावाद की स्थापना करता है।

वस्तुवादी भी है।

जैनों का यह आक्षेप है कि बौद्ध एवं अद्वैतवेदांत के तत्वमीमांसीय मतों में "एकांतवाद" का दोष है। एकांतवाद से आशय वस्तु के अनेक गुणों में से किसी एक गुण को ही उसकी पूर्णता के रूप में स्वीकार करना है। जैन मतानुसार बौद्ध दर्शन "क्षणिक-एकांतवाद" एवं अद्वैतवेदांत "ब्रह्म-एकांतवाद" के दोष से ग्रसित है। चूँकि एकांतवाद, अनेकांतवाद का विरोधी है, इसी आधार पर जैन इन दोनों मतों को अस्वीकार करता है।

जैन मतानुसार केवल वही वस्तु सत् है जो नित्यता के साथ-साथ उत्पत्ति एवं विनाश से युक्त है। इस रूप में जैन "द्रव्य" को (गुणपर्यायवद् द्रव्यं) सत् मानते हैं क्योंकि गुण की दृष्टि से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

द्रव्य नित्य है जबकि पर्याय, द्रव्य की उत्पत्ति एवं विनाश की व्याख्या करता है।

जैन मतानुसार अद्वैतवेदांत का नित्यता ही सत् है, परिवर्तन भ्रम मात्र है, को सत् के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि ऐसा मानने से विनाश व उत्पत्ति की व्याख्या नहीं हो सकती।

इसी और बौद्ध परिवर्तन को ही एकमात्र सत् एवं नित्यता को भ्रम मात्र मानते हैं। परन्तु ऐसा मानना नित्यता की व्याख्या नहीं कर पाता।

इस प्रकार बौद्ध व अद्वैत वेदांत के तत्वमीमांसीय विचार असंगत हैं क्योंकि इनमें एकांतवाद का दोष है।

इसकी और अनेकांतवाद अनेकता व नित्यता व एकता व परिवर्तन का समन्वय करते हुए द्रव्य की सत् के रूप में व्याख्या करता है।

उत्तर में क्रमबद्धता लाने का प्रयास करें।

4 1/2

आलोचना –

1. शंकर मतानुसार जैन का सत्तामीमांसीय विचार दार्शनिक दृष्टिकोण से अस्वीकार्य है क्योंकि यह जगत में एकता के बजाय नानात्व व विविधता की खोज करता है। जो जगत में विविधता की खोज करता है, वह सांसारिक चक्र में ही पड़ा रहता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दर्शनशास्त्र (वैकल्पिक विषय)

(टेस्ट-I) प्रथम प्रश्नपत्र

(चार्वाक, जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन, सांख्य दर्शन, योग दर्शन)

निर्धारित समय: तीन घंटे

Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250

Maximum Marks : 250

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी भाषा में ही मुद्रित हैं।

परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed only in **HINDI** Language.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

Copyright – Drishti The Vision Foundation